बाजै बीन, बजावै तीन

डॉ० अमरेन्द्र

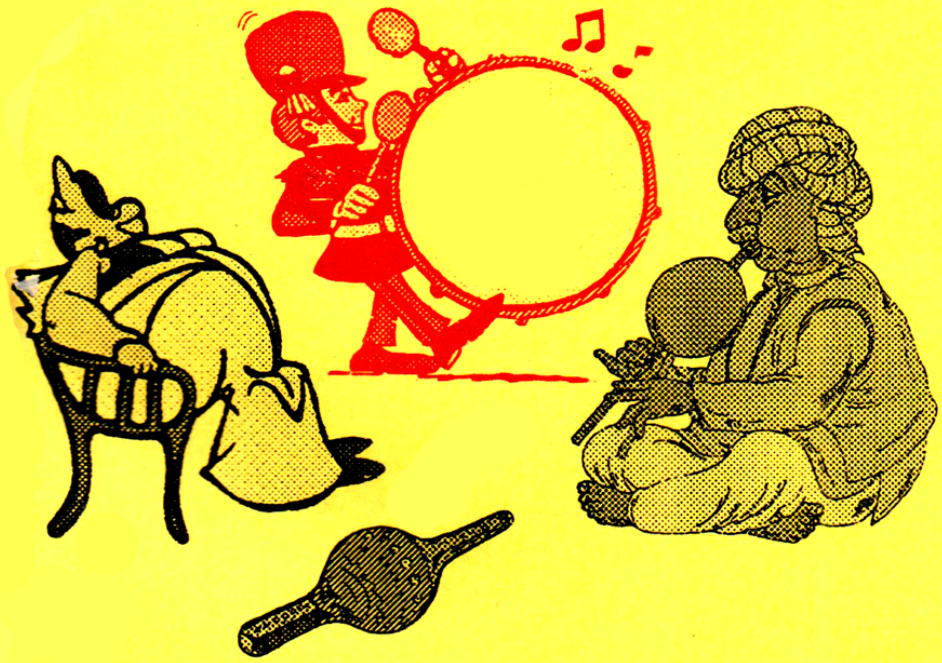

बाजै बीन, बजावै तीन

प्रथम प्रकाशन
ई. २००४

प्रकाशक
अंगिका संसद, भागलपुर (बिहार)

नूनू बाबू सिनी सें

बच्चाहौ में आरो छोटों बच्चा सिनी सोचतें होतै कि हमरा सिनी लायक ओत्तें कविता 'ढोल बजै छै ढम्मक ढम' आरो 'बुतरू के तुतरू' में कहाँ छै ! ठीक शिकायत छै । यहें शिकायत कें दूर करै लेली आबें लै आनलें छियै—'बाजै बीन, बजावै तीन' । खाली नुनुवे बाबू नै, ई बीन कुछ हेनों बनैलों गेलों छै कि मंझलक्है नै, नानाहो-नानी, दादाहो-दादी बजावें पारें ।

तें है लें—बजाबों तीन्हो, बाजतौं बीन्हो ।

तोरहे सिनी रों
लाल काका

❖ कविता-क्रम

- मूसों आरो मामा/5
- बड़का मामा/5
- मन्तरिया मामा/5
- मट्टीखोर मामा/5
- बुझौवल/6
- के की करै/7
- समझ/7
- मामा रों हाल/7
- कैलू के करनी/8
- मामा/8
- करनी रों फोंल/9
- काका आरो बुतरू/9
- मामा रों खेल/9
- पियक्कड़ छोटका मामा/10
- मामा/10
- माघी धूप/10
- पाँच मुकरी/11
- बाजै बीन/12
- जिनखेल/12
- नानी/13
- लोरी/14
- जंगल-जान–जहान (बाल गीति नाट्य)/15

मूसॉ आरो मामा

मूसॉ खैलकै कपर-कपर;
बिल्ली खैलकै चपर-चपर;
दादां खैलकै गपर-गपर;
मामा खैलकै हपर-हपर;
कुतबो खाय मुस्तंडा छै,
बाँकी खाय लें डंडा छै ।

बड़का मामा

बड़का मामा मुकुर-मुकुर,
बीड़ी पीयै धुकुर-धुकुर,
ताड़ी पीयै ढुकुर-ढुकुर;
मरता एक दिन हुकुर-हुकुर ।

मन्तरिया मामा

अगड़म-बगड़म मामा दू,
दिन भर मारै मन्तर-छू;
मन्तर में छोहारा छै,
दिन में सूझै तारा छै ।

मट्टीखोर मामा

पिहनी फट्टा ढोल पजामा
घुढ़कुनियाँ मारै छै मामा,
कोना में जाय सट्टी कें
जी सें चाटै मट्टी कें;
देखी खैवों आबें मार,
मामा दै मुड़गुनियाँ पार ।

बुझौवल

चार ठो खुट्टा कड़ों-कड़ों,
वै पर पर्वत बहुत बड़ों;
पर्वत डोलै, खुट्टा काँपै,
सबकें एक्के साँपें नाँपै;
हेनों की अचरज छै बोल ?
नै तें होतौ माथों गोल ।
—उत्तर : हाथी

बुझौवल

गर्दन ऊँचा पर, मुर्गो नै,
शिवलिंग लागै, मतुर वहो नै;
बिन चक्का रों गाड़ी छेकै
दुश्मन कें धूरा रँ फेकै।
हेनों की अचरज छै बोल ?
नै तें होतौ माथों गोल ।
—उत्तर : ऊँट

बुझौवल

इक राकस रों माथा खोल,
वैमें भगजोगनी रों टोल;
बारी-बारी आँख कें खोलै;
कभियो नै कटियो टा डोलै;
हेनों की अचरज छै बोल ?
नै तें होतौ माथों गोल ।
—उत्तर : रात

के की करै

हवा करै साँय-साँय;
सुगा करै टाँय-टाँय;
बैलगाड़ी चर्र-चोंय;
बेंग करै टर्र-टोंय;
नाना खाँसै ढाँय-ढाँय;
नानी करै झाँय-झाँय ।

समझ

कुत्ता बूझै, आ तू-तू,
आरो कबूतर बियो-बियो;
अर्र-अर्र, बूझै बकरी;
बिल्ली बूझै, मियो-मियो।
म-अ-र-ए चारे टा,
दुष्टें बूझै मारे टा ।

मामा रों हाल

मामा रों बस एक सवाल—
कखनी पकतौ रोटी-दाल?
ई देखों मामा रों हाल,
मछली बाहर, आपनें जाल।
संभरै नै मामा सें झाल,
तहीं सें दै चूतड़ पर ताल।
आयकल मामा मालेमाल,
दू कीलो भर दोनों गाल।
कबें कटैवों भालू-बाल?
मामा ऐल्हौं नयका साल।

कैलू के करनी

खैवे पर ध्यान दै,
के एकरा ज्ञान दै।
आवै छै घुप सना,
बानर ज्यों हुप सना।
लुचकै छै लुप सना,
पकड़ै छै चुट सना।
टूटी जाय पुट सना,
घर घूसै सुट सना।
कैलू के करनी,
माय भरै भरनी ।

मामा

जंगल-झाड़-पतार-कदीमा-कद्दू-आलू,
जत्तेँ नै छै मामा ओत्तेँ मामी चालू।
अगरो-बगरो, कौआ-मैना, पिपरी-खटमल-खोटा,
दूध किनै लेँ मामा गेलै भूली ऐलै लोटा।
हाथी-गीदड़-भैंसा-चीता-केला-खरबुज-भुट्टा,
भैंस कहीं तेँ छोड़ै मामा, लै आनै छै खुट्टा।
अड़गड़ मारै, बड़गड़ मारै, मारै कुत्ता-बकरी,
खाय सें पहिलें यहेँ हुऐ छै मामा जाय छै ढकरी।
आलू-बालू, छर्री-लोहोँ, नानी-नाना, दादा,
कोय परीक्षा हुएँ, मामा कॉपी छोड़ै सादा।
देह बढ़ै लेँ खाय छै मामा किसमिस-कंद-पपीता,
तीन फिटोँ सें बढ़थैं नै छै, दिन भर नाँपै फीता।

करनी रों फोंल

सबसें बची कें हट्टी कें,
दीवारों सें सट्टी कें,
दादा खाय सरपट्टी कें,
तोड़ी देलकै चट्टी कें,
पौंआ-पासी-पट्टी कें।
देलकै मांय धरपट्टी कें।

काका आरो बुतरू

जब ताँय घर में काका छै,
मालिक बनलों आका छै।
घर में दिल्ली-ढाका छै,
खूब कमैलें टाका छै।
बुतरू वास्तें फाका छै,
खेलवे पर ही डाका छै।
बच्चै काँटों-कूसों रं,
डर सें बच्चा मूसों रं।

मामा रों खेल

पेट बराबर फुललों गाल,
मामा चलै दुलत्ती चाल।
झापड़ो माथो,बढ़लों चूल,
जैमें पाँच पसेरी धूल।
पढ़ै-लिखै में अजगुत खेल,
नौमी में नौ दाफी फेल।
रौदिये में घूमै छै मामा,
भैगने कें धूनै छै मामा।
दिन भर मारै घर में मूसों,
माथा में भरलों छै भूसों।

पियक्कड़ छोटका मामा

बड़का पक्का चोर पियक्कड़ छोटका मामा,
चाटै हरदम ठोर पियक्कड़ छोटका मामा।
कान अमैठै बुतरू सब के बिन बाते के,
जी के बड़ा कठोर पियक्कड़ छोटका मामा।
चोर-चिब्ल्ला वास्तें एकदम पंडित-ज्ञानी,
बुतरू वास्तें 'बोर' पियक्कड़ छोटका मामा।
दिन भर तमतम मुँह करै बिन टोकले-टाकले,
गरजै छै घनघोर पियक्कड़ छोटका मामा।
जखनी दै छै मार दरोगा-पुलिस-सिपाही,
खूब चुआवै लोर पिक्कड़ छोटका मामा।
कत्तो खाय छै मार मतर नै आदत सुधरै,
पक्का छै लतखोर पिक्कड़ छोटका मामा।

मामा

लरपच मामा-बत्ती बाँस,
देहोॅ पर नै जरियो माँस।
बोली तै पर टनकोॅ टाँस,
लौंगिया मिरचा नाँखी झाँस।
बिलखै छौं कहिया सेॅ बुतरू,
लानी दौ करकोइयाँ-तुतरू।

माघी धूप

बर्फे रं छै अबकी धूप,
बड़ी कठोरिन माघी धूप।
देह जरो नै गरमावै छै,
उगवो करै तेॅ बाँझी धूप।
दादा घर में थरथर काँपै,
बड़ी कसाय कनकन्नी धूप।
बोरसी तर सेॅ बाबा बोलै,
मारतै यें मरखन्नी धूप।
गोड़ लगै छी उगोॅ-उगोॅ,
नानी, दादी, काकी धूप।

पाँच मुकरी

इस्कूल पहुँचों आगू ऐत्हौं;
छों घण्टा तक माथों खैत्हौं;
सब चटिया लुग घूमै छुट्टा;
के रे, गुरू जी?
नै रे—हुट्ठा।

२

खावै सें मतलब भरपेट्टा;
टानै छै, जतना रग-चेट्ठा;
चलै झुण्ड में बान्ही पाँती;
के बरियाती?
नै रे—हाथी।

३

भोरे होत्हैं नींद तुड़ावै;
बड़को सब रों होश उड़ावै;
भन-भन करै जे रातो-दिन भर;
की रे दादी?
नै रे—मच्छर।

४

सड़ल्हौं अन्न कें देखी रीझै;
पेटों लें नालियो ताँय गींजै;
आपनों भाग पर आपन्है खीझै;
की अरे टूअर?
नै अबे—सूअर।

५

निकलौं जेन्हैं कि साथें लागतौं;
गोड़े लग जाय कूँ-कूँ करतौं;
कोय्यो बैरी सें नै डरतौं;
की अरे कुत्ता?
नै अबे—जुत्ता।

बाजै बीन

बाजै बीन, बजावै तीन,
बात बड़ोॅ ई, बड़ा महीन।

नाँती वास्तें बात बरोबर
की तबला, की ढोलक-टीन,
बाजै बीन, बजावै तीन ।

बात बुझै लेॅ बिचला मामा
दौड़लै-लंका, तिब्बत, चीन,
बाजै बीन, बजावै तीन ।

नानी सेॅ जों बात पूछलियै,
हुनका आवी गेलै नीन;
बाजै बीन, बजावै तीन ।

जिनखेल

तड़बड़ ताशा, तड़बड़ ताशा,
पूजा पर सें गोल बतासा।
मामी छै खोजै मेॅ बेदम,
ई देखी पंडित जी तमतम।
नानी फूलोॅ तर मेॅ खोजै,
ई जिनखेल लगै छै सोझै।
आखिर मेॅ जाय खुललै पोल,
मामा मूँ सेॅ फुटै नै बोल।
पूज्हौ वक्ती वहेॅ तमाशा,
तड़बड़ ताशा, तड़बड़ ताशा।

नानी

अ सें अक्खज, ऊ सें ऊन,
नानी जैती देहरादून।
क सें कौआ, ख सें खाल,
नानी केरों गलै नै दाल।
ग सें गुल्ली, घ सें घूस,
केना काटतै नानी पूस।
च सें चुक्का, छ सें छाल,
चलतें रहै छै नानी गाल।
ज सें जातों, झ सें झोंक,
नाना भरगर नानी फोंक।
ट सें टूसों, ठ सें ठूँठ,
नानी सहै नै कटियो झूठ।
ड सें डब्बू, ढ सें ढोल,
नानी रों सब दाँते गोल।
त सें तुमड़ी थ सें थान,
नानी रों नाँती जजमान।
द सें दमड़ी, ध सें धोंन,
नानी चूल-सनांठी सोंन।
न सें नाना, प सें पान,
नान्है पर नानी रों ध्यान।
फ सें फुद्दी, ब सें बाँस,
खनखन नानी सहै नै झाँस।
भ सें भगतिन, म सें माय,
नानी हमरी सुद्धि गाय।
य सें युक्ति, र सें रीत,
नानी खैथौं गावै गीत।
ल सें लट्ठी, व सें वाह,
नानी रों चाय्ये पर चाह।
स सें सुइया, ह सें होंर,
नानी रहतें केकरों डोंर।

लोरी

१

नूनू नीन बुलावै छै,
नीन कैन्हें नी आवै छै।
नीन बसै छै तिब्बत-चीन,
कल्हें-कल्हें आवें नीन!
पर्वत-जंगल लाँघी कें,
पोखर-नद्दी-बांधी कें,
घोड़ी चढ़लें आव गे नीन,
गिनती गिनलें इक-दू-तीन!
रस्ता में नै रुकियैं तोंय,
बेंग बुलैतौ टर्रम-टोंय।
उड़लों ऐतौ लाल परी,
रौकतौ तोरा घुरी-घुरी;
चंदा देतौ झूलै लें,
ई रस्ता कें भूलै लें;
पर रस्ता ई भूलियैं नै,
चंदा पर तोंय झूलियैं नै,
झब-झब मलकी ऐलै नीन,
तुतरू-ढोल बजैतें-बीन।
नीन सुतै छै हौदी में,
नूनू माय रों गोदी में।

२

नूनू नींद बुलावै छै,
नींद कैन्हें नी आवै छै!
आव गे नींद दुलारी आव!
नूनू केरों प्यारी आव!
काजर आ कजरौटी लै,
मिसरी, मक्खन, रोटी लै,
चाँद खिलौना लेनें आव,
लाल परी बोलैनें आव!
छम-छम नाँचतै लाल परी,
नुनूओ नाँचतै हाथ धरी।
आँख मौलै छै दूनू के,
नींदियो आरू नूनू के।
नींदिया सुतलै बारी में,
लाल परी गोरथारी में।
चंदा सुतलै हौदी में,
नूनू सुतलै गोदी में।

बाल गीति नाट्य

जंगल-जान—जहान

पहिलों दृश्य

मंच पर कटलों-कटलों गाछों रों दृश्य । मंच के बीचोबीच दू मोटों रं गाछ। एक दिशा सें पाँच आदमी मंच पर आवै छै । दू के हाथों में बन्दूक छै आरो तीन रों हाथों में कुल्हाड़ी । पाँचों केरों मुँह-माथों कपड़ा सें ढकलों छै । कुछु देर लेली पाँचो हिन्नें-हुन्नें बड़ी सावधानी सें घूरै छै आरो फेनू कुल्हाड़ीवाला आदमी गाछ कें काटना शुरू करी दै छै। पेड़ काटै के आवाज गूंजै छै । बन्दूकवाला दोनों आदमी बन्दूक तानलें दुनूं दिशा में हिन्नें-हुन्नें ताकतें घूमें लागै छै । गाछ कटी कें गिरै छै आरो एकरे साथें पर्दा गिरै छै ।

दुसरों दृश्य

(एकठो कटलों पेड़ पर बैठलों सिंह कुछू देर मौन रहला के बाद दोनों दिश मुँह करी कें हाँक लगावै छै।)

सिंह : छोटू-मोटू अल्लर-मल्लर,
डिग्गा-डिग्गी, झाँझर-मानर,
जे जन्नें छैं, जल्दी आव;
हाथी, भालू, हरिन, बिलाव,
बानर, भैंसा, बाघ, सियार,
नया विपत छौ, नया कचार!
कटलों जाय छौ जंगल-गाछ,
मक्खन की? मिलतौ नै छाछ।
बालू पर खाड़ें छौ नाव
जे जन्नें छैं, जल्दी आव!

(मंच पर चारो दिसों सें बाघ, भालू, हाथी, भैंस, सूअर आरनी रों प्रवेश आरो एक-एक करी कें सिंह के नगीच आवी कें बैठी जाय छै । गाछ-बिरिछ दिस देखतें सिंह फेनू हाँक लगावै छै ।)

सिंह : कौआ, मैना, सुग्गा, गिद्ध,
ध्यान जगाय में बगुला सिद्ध,
कोयल, पपीहा, मैना, मोर!
ढुकलों छौ जंगल में चोर।
भारी पड़तौ जिनगी भाव,
जे जन्नें छैं, जल्दी आव।

(मंच रों पिछुलका भागों पर खड़ा गाछ सिनी पर मैना, मोर, बगुला, चील आरनी उड़ी-उड़ी आवी कें बैठें लागै छै । (ई काम गाछों में लोहा आरो चिड़िया सिनी के टांगों में चुम्बक बान्ही कें लेलों जावें सकै छें।) सिंह कें छोड़ी जेकरा जे कहना होय छै, आपनेंबात खाड़ों होय्ये कें कहै छै ।)

भैंसा : की बातों लें छिकै बुलाहट?
कोंन विपत्ति के छै आहट?
की जंगल में देखलौ कोय;
राखी देवै ओकरा धोय।
कैहिनें तोरों मोंन मलीन?
जल्दी बोलों—एक, दू, तीन।

सिंह : संकट में छै पशु-समाज,
जंगल पर गिरलों छै गाज।
रोज कटै छै गाछ-बिरीछ,
आरो हम्में कैहिनों नीच।
देखौं टुक-टुक जान बचाय,
कैहिनों हम्में घोंर कसाय!
पर असकल्ले करियै की,
भिड़ी कें वै सें मरियै की !

(सिंह गालों पर हाथ धरी गुमसुम बैठी जाय छै । गाछों पर चिड़िया सिनी के कुछ देर लेली काफी शोरगुल होय छै, फेनू हठाते बन्द (ई काम टैपरिकार्डर

में बंद चिड़ियां सिनी रों रं-रं के आवाज सें करलों जैतै) । तबें एक ओर बैठलों सूअर खाड़ों होय कें बोलै छै।)

सूअर : जंगल पर जों होय छै घात,
यैमें भिड़ै के की छै बात!
जंगल जानौ, जानौ गाछ,
हमरा नै पीनौ छै छाछ;
बसवै जाय कें दुसरों वोंन,
गड़लों छै यैठां की धोंन ?

हाथी : सूअर तोहें सूअरे रहले,
बिन बुद्धि के टुअरे रहले,
वनकट्टां कोय छोड़तौ वोंन,
छोड़ी रहलों छै वें कोंन?
सब जंगल तें कटले जाय,
बस्ती वैमें बसले जाय;
बस्ती में घूमै छै लोग,
वन कें लागलै उजड़ा रोग।
सोचैं, रहवे कन्नें जाय?
ठामे ठाड़ों हँसौ कसाय!

भालू : जंगल छेकै हमरों घोंर,
घोंर बिना तें डोंरे-डोंर।
छाती फाटै, व्याकुल जी,
लेकिन हम्में करियै की !

खरगोश : कैहिनें चिन्तित तोरा सब,
लोग यहाँ छै अरब-खरब;
जाय छियौं; करवै फरियाद,
जंगल-जन्तू जिन्दाबाद!

उल्लू : अकिल तोरा कुछ ऐतौ नै,
भोलोपन भी जैतौ नै,
जे जगल कें काटै छै;
काटतें दिल नै फाटै छै;
जौनें देतें ऐथैं दुख;
वें मनुक्ख की देतै सुख?
अपन्है में कुछ करों उपाय;
तभिये भागतौं काठ कसाय।

(पीछू के एक गाछ अपनों जग्घा पर थोड़ों हिलै छै आरो दायाँ-बायाँ दिशा में आपनों दू डाली कें हिलाय-हिलाय बोलै छै।)

वृक्ष : अभी मनुक्खों कें नै चेत,
लागतै दुर्दिन के जब बेंत;
छाँव नै मिलतै कोसो-कोस,
हवौ शुद्ध नै—ऐतै होश!
पर दुसरा पर कथी के आस,
जों उपाय छै अपनों पास।
चाहौ—भागें अगर कसाय,
सबसें अच्छा यहें उपाय,
वनकट्टा जेहिनें कें आवें,
सब चिड़ियाँ मिली शोर मचावें;
झपटै वै पर बाघ-सियार,
फँसतै अपने आप शिकार।

(बैठलों बन्दर नाँचतें उठै छै, फेनू रुकी कें बोलै छै।)

बन्दर : एकदम-एकदम-एकदम ठीक,
मिलतै वनकट्टा कें सीख।

नोची-भोंमरी हम्में लेवै,
जिनगी भर के सीख सिखैवै ।

(गाछी पर बैठलों सुग्गा पाँख डोलैतें बोलै छै)

सुग्गा : कल्हो ऐतै भोरे-भोर,
करिये उठवौं हम्में शोर।
सुनथैं दौड़ियों तोरा सब,
मलकी कें नै—झब,झब,झब!
इखनी जे कुछ भी कहलौं
बात यही पक्की रहलौं ।

(सिंह दोनों हाथ उठैतें खाड़ों होय बोलै छै।)

सिंह : राय यही हमरौ स्वीकार,
देखलौं हम्में करी विचार;
अपनों किस्मत अपनों हाथ,
कौनें दै छै केकरों साथ;
मिल्लत में ही ताकत छै,
नै तें सबठा आफत छै।
संघे सें सब डरै यहाँ,
एकरे बिन सब मरै यहाँ।
मिली-जुली कें भिड़ना छै,
यम के आगू लड़ना छै।
साफ-साफ जानों मतलब,
जंगल कटै तें हमरौ सब।
याद करों कुछ सालों कें,
तबकी-अबकी हालों कें—
कत्तें बड़ों रहै संसार,
कहाँ गेलै हमरों परिवार?

मारलों गेलै जंगल में,
कोय शहरों के दंगल में;
मिलवां मिलै नै आय बटेर,
कल ई लागथौं हमरौ फेर।
आय सें आबें जंगल में,
हानि-लाभ के दंगल में,
साथे-साथ ही रहना छै,
ज्यादा कुछ नै कहना छै।
अगर बनैलों राखों रीत,
निश्चित होतै हमरों जीत!

(सब पशु-पक्षी आपनों टांग आरो डैना ऊपर उठाय-उठाय कें सिंह के बातों के समर्थन करै छै।)

तेसरों दृश्य

(मंच के पीछू दू-चार कटलों वृक्ष दिखावै छै। बायाँ-बायाँ भी धारा-पाती गाछे छै। मंच रों बीच एक गाछ छै। देखत्हैं-देखत्हैं मंचों पर पाँच ठो आदमी के घड़धड़ैलों प्रवेश होय छै, जे मंच पर ऐत्हैं बड़ी सावधानी रों साथ चारो दिस देखना शुरू करै छै। पाँचो आदमी के मुँह आरो माथों कारों कपड़ा सें ढँकलों छै। दू आदमी के हाथों में बन्दूक छै, जे मंच के दोनों दिश पहरेदार के रूपों में तैनात होय जाय छै। बाकी तीन के हाथों में कुल्हाड़ी छै, जे मंच के बीचोबीच खाड़ों गाछ कें काटै के गरज सें सब्भे ओर में खाड़ों होय जाय छै। वैमें एक जेन्हैं कुल्हाड़ी चलाय के मुद्रा में आवै छै कि गाछों पर सुग्गा टें-टें करना शुरू करी दै छै, जेकरों साथ्हैं ढेर किस्म के चिड़िया रों आवाजो उठें लागै छै। लकड़कट्टा सिनी हतप्रभ होय कें आकाशों दिस ताकै छै। तभिये एक कोना में गुर्रेतें होतें बाघ दिखावै छै। बाघों के देखत्हैं लकड़कट्टा साथ्हैं बन्दूक वालाहौ थरथरावें लागै छै। देखत्हैं-देखत्हैं आरो-आरो दिशा सें भालू, हाथी, कुत्ता, सियार आरनी के आवाज गनगनावें लागै छै। पाँचो आदमी वहाँ सें भागै के फिराकों में होय जाय छै कि तभिये बन्दर, सियार, कुत्ता वहाँ आवी कें वै सिनी कें नोंचवों-खखोरवों शुरू करी दै छै। मंच के बीचू

में खाड़ों गाछो अपनों डाली सें लकड़कट्टा सिनी कें दू-चार झाँटों दै छै। कुछुवे क्षणों में अपनों-अपनों टाँग उठैनें दुनू दिसों सें हाथी आरो भालू आवी कें वहाँ खाड़ों होय छै, जे देखत्हैं पाँचो बन्दूक आरो कुल्हाड़ी वांही फेंकी कान पकड़लें एक-दूसरा सें टकरैतें दर्शकों दिस कूदी कें भागी जाय छै। पाँचो के भागत्हैं वहें सब प्राणी मंचों पर जौरों होय जाय छै आरो आगू के अपनों दोनों टाँग-हाथ उठैनें नाँचै-गावें लागै छै। गाछी सिनी पर बैठलों चिड़ियो सिनी डैना उठैनें शोर मचावें लागै छै।)

(पर्दा के गिरवों)